मध्य हिमालय का विकास मॉडल होगा प्राकृतिक संसाधनों का सतत् प्रयोग एवं एकीकृत नियोजन

राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन की एक पहल

मध्य हिमालयी में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता के बाद भी यहां ग्रामीण समाज आत्मनिर्भरता से लगातार दूर होता जा रहा है। आज यहां पलायन जैसी समस्याओं पर गंभीर चिंताएं जताई जा रही है। परंपरागत कृषि, पशुपालन आदि से स्थानीय कृषकों को कभी आत्मनिर्भरता नहीं मिली, जिस कारण उनका इससे मोह भंग होता चला गया। यदि ग्रामीण अपने परिवेश की संभावनाओं को देखकर विविध कामों को एक साथ कर उसका सम्मिलित नियोजन और प्रबंधन करे तो संभवतः वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में सहायक होंगे। इसी विचार को मूर्त रूप देने के उद्देश्य ये राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन के तहत प्राकृतिक सांसाधनों के एकीकृत रूप से सतत् उपयोग और प्रबंधन हेतु अनेक मॉडल विकसित किए जा रहे हैं।

गोविंद बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान कोसी ने द्वारा ''मध्य हिमालयी क्षेत्रों में एकीकृत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन द्वारा सतत् आजीविका सुधार परियोजना'' के तहत हवालबाग विकासखण्ड के 8 गॉवों को इसके लिए चयन किया गया। ये गांव जो पलायन, बेरोजगारी, पिछड़ी खेती, कम उत्पादकता व पुरानी कृषि पद्धति पर ही निर्भर थे। 2011 के ऑकड़ों में जहां इन गॉवों में 470 परिवार थे। वहीं परियोजना कार्य के 2016 के अध्ययन में यह परिवार घटकर 453 हो गए थे। क्षेत्र के पिथरार, भेवगाड़ और सकनियाकोट गॉवों में पलायन और भी तीव्र था। रोजगार का अभाव, शिक्षा, कृषि का पिछड़ापन व स्वास्थ्य इस पलायन के मुख्य कारण पाए गए। सड़क आदि की पहुंच के बाद भी इन गॉवों में सक्षम व अति प्रभावित दोनों तबका पलायन कर रहा था।

सर्वे के बाद परियोजना के तहत ग्वालाकोट, ज्यूला, तिलौरा, पिथराड़, भेवगाड़, सकार, तिलाऊं, सकनियाकोट आदि गॉवों से परियोजना को क्रियांन्वित किया जा रहा है। गॉवों में वन्य जीवों के खतरे, पर्यावरणीय बदलावों के प्रभाव, पलायन, अलाभकारी खेती, तकनीक का अभाव, सिंचाई साधनों का अभाव, बंजर भूमि की अधिकता व बिखरी व छोटी जोत जैसी समस्याओं पर केंद्रित इस परियोजना की विशेषता है कि इसमें वैज्ञानिक व सामाजिक प्रबंधन का प्रयोग सूक्ष्म स्तर पर सहभागी पद्धति से किया जा रहा है।

संस्थान के ग्रामीण तकनीकी परिसर कोसी में प्रशिक्षणों के दौरान ग्रामीणों को अनेक स्तरों पर तैयार करने के लिए परियोजना के तहत काम किया गया। सफल कहानियां, ऑडियो-वीडियो सामग्री, प्रशिक्षण आदि के बाद हर गॉव से बड़ी संख्या में ग्रामीण यह मानने लगे हैं कि पहाडों में संसाधनों का उपयोग करने की वैज्ञानिक सोच उन्हें अपनानी चाहिए। लगभग 460 से अधिक ग्रामीणों को अब तक विभिन्न क्षेत्रों में सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया गया। मशरूम उत्पादन, मुर्गी पालन, मछली पालन, सब्जी उत्पादन, संरक्षित खेती, बहुउपयोगी वृक्षारोपण, मृदादायिनी फसलों का उत्पादन आदि प्रशिक्षणों के बाद छोटी मात्रा में ही सही अनेक किसान इस कार्य को अपनी आजीविका से जोड़ने को तैयार है। इसके साथ ही ऑफ फार्म कार्यक्रम भी शुरू किए गए। ग्रामीण युवाओं, महिलाओं और जनप्रतिनिधियों ने इस कार्य मे भरपूर सहयोग किया।

स्थानीय गॉवों की वन पंचायतों, विभिन्न विभागों व सामाजिक संस्थाओं को सम्मिलित कर इस परियोजना में विविध कार्य किए जा रहे हैं। वर्तमान में 5 गॉवों में सघन रूप से चल रहे इन कार्यों के परिणाम इन दो सालों में दृष्टिगोचर हो रहे हैं। बहुउपयोगी प्रजाति के पेड़ों का रोपण, पिरूल से कोयला निर्माण, मछली पालन, नगदी फसलों को बढ़ावा, मछली पालन, मुर्गी पालन व उन्नत खाद निर्माण जैसी प्रक्रियाओं से न केवल ग्रामीण समुदाय की दक्षता को बढ़ाया जा रहा हैं। लगभग तीन दर्जन से अधिक ग्रामीण महिलाएं चीड़ व अन्य वस्तुओं से सजावटी सामान बनाना सीख चुकी हैं। कौशल विकास के साथ उनका आत्मविश्वास व आय बढ़ाई है।

दो सालों के सम्मिलित प्रयासों के बाद इन गॉवों में ग्रामीणों की सोच व कार्यप्रणाली में परिवर्तन को साफ देखा जा सकता है। सम्बंधित गॉवों में नगदी फसलों में लहसुन, प्याज, अदरक, हल्दी, धनिया आदि का उत्पादन शुरू होने लगा है और खेती को अब ग्रामीण लाभकारी मानने लगे हैं।

छोटी जोत वाले कृषक नगदी फसलों से अपनी आजीविका संचालित करने पर भरोसा करने लगे हैं। 100 से अधिक निर्धन परिवारों ने नगदी फसल को अपनी आय का जरिया बना लिया है। इन ग्रामीणों के अनुसार वे लगभग 1 लाख रूपए की आय इन उत्पादों से कर चुके हैं। भविष्य में वे इसके अन्य उत्पाद बनाकर बेचने की योजना बना रहे हैं। इन उत्पादों के लिए अब ये गॉव अपनी पहचान भी बनाने लगे हैं। कहीं आलू तो कहीं अदरख व कहीं लहसुन के लिए उपयोगी भूमि उन गॉवों को अपनी पहचाने दे रही है। अपनी जरूरत पूरी करने के साथ वे इन उत्पादों को स्थानीय बाजारों में भी बेचने लगे है। हालांकि बाजार तक अभी उनकी मजबूत पकड़ नहीं बन पाई है। परियोजना के साथ-साथ विभिन्न सरकारी विभागों की योजनाओं से ग्रामीणों को सीधे जोड़ने का लाभ गॉवों को मिलने लगा। कृषि, पशुपालन, मत्स्य, वन विभाग आदि ने भी अपनी विभिन्न योजनाओं से गॉवों को आच्छादित किया। फलस्वरूप गॉव में खेती , पशुपालन, दूध व्यवसाय, आदि में भी इसका लाभ देखा गया।

दाड़िखोला गॉवा की सक्रिय महिला पुष्पा नयाल परियोजना के तहत मिले किन्नू के विकसित पेड़ों को देखकर खुश है। उनके शब्दों में काम करने वालों के लिए पहाड़ में सब कुछ है। इस बार उनके गॉव में कुंतलों लहसुन और प्याज हो रहा है, नई अदरख भी उग आई है, वन्य जीवों से यह सुरक्षित फसल हैं बस बाजार तक पहुंच बननी बॉकी है। अनाज खेती छोड़ने के बाद भी वह पर्याप्त मात्रा में सब्जी उत्पादन करती है। समूह बनाकर महिलायें अनेक सम्मिलित गतिविधियों को संचालित करती है। वन्य जीवों के नुकसान खेती को बचान सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण है।

गतिविधियां-

- -भूमि सुधार
- -संरक्षित खेती
- -एकीकृत कृषि जन्य प्रारूप
- -नगदी फसलों को बढ़ावा
- -बंजर भूमि उपयोग
- -जैविका खेती व खाद प्रोत्साहन
- -दुग्ध उत्पादन एवं बकरी पालन
- -चीड़ अवशेषों का (क्राफ्ट) उपयोग

ग्रामीणों के बीच खेती व किसानी के सफल मॉडल खड़ा करने के उद्देश्य से क्षेत्र में लगभग 25 नाली बंजर भूमि में परियोजना के तहत दाड़िमखोला के ग्रामीणों की आम राय से नींबू प्रजाति की पौध रोपण के साथ चारा पत्ती, व तेजपत्ता का पौधरोपण कर नया उदाहरण प्रस्तुत किया गया। वर्तमान में लगभग 10 नाली के लगभग भूमि में किन्नू, तेजपत्ता व चारा प्रजाति के पौधों को सफलतापूर्वक बगीजे के रूप में विकसित होते हुए देखा जा सकता है। यह आसपास के गॉव के लिए भी प्रेरणा है। इस दौरान परियोजना के तहत ग्रामीणों को समूहवार एकत्र कर स्थानीय खेती, पानी, वनों से सम्बंधित समस्याओं का भी गहन अध्ययन किया गया।

भगतोला गॉव में बची राम के घर में एकीकृत कार्य का सफल मॉडल इसका उदाहरण है। उनके ऑगन में विभिन्न मौसमी सब्जी उत्पादन के लिए लगाया गया पॉलीहाउस, मुर्गी बाड़ा और मछली तालाब समग्रता में उनके परिवार की आय का जरिया बना हुआ है। वे खुद मानते हैं कि मुर्गी पालन, सब्जी उत्पादन से ही उनके परिवार की अच्छी आय होने लगी है। मछली पालन का प्रयोग भी उनका सफल हो रहा है इसके परिणाम आने बाकी है। पिछले साल ही मुर्गी फार्म से उन्होंने 19 हजार रुए की आय अर्जित की है। क्षेत्र में 8 ऐसे और सफल मुर्गीपालक देखे गए जो केवल मुर्गी पालन से 40 से 50 हजार रूपया आय अर्जित कर चुके हैं।

एकीकृत प्रकृति की इस योजना का लाभ ग्रामीणों को मिलने लगा । सकार गॉव के प्रधान विरेंद्र सिंह ने बताया कि सरकारी योजनाओं से भी ग्रामीणों को लाभान्वित किया गया। सरकारी विभागों की प्रक्रिया से उन्हें नहीं गुजना पड़ा, विभिन्न विभागों की योजनाओं से परियोजना द्वारा सीधे हमें लाभान्वित किया गया। परियोजना से जुड़े कार्यकर्ताओं ने गॉव में हमारे साथ वैज्ञानिक ढंग से कृषि कार्य किए जिस कारण हमार उत्पादन बढ़ा। पॉलीहाउस हमारी आय का अच्छा माध्यम बन रहे हैं। इसके अतिरिक्त, बीज, खाद, सिंचाई आदि का वैज्ञानिक ढंग से उपयोग भी हमें सिखाया गया। परियोजना के बाद ग्रामीण इस पद्धति के आदी हो जाएंगे और परियोजना के उद्देश्य सफल होंगे। अदरख प्याज, लहसुन, धनिया, हल्दी आदि की खेती के लिए आज कृषक बीज के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होते जा रहे हैं।

क्षेत्र के 32 परिवारों को परियोजना के तहत उन्नत क्रायोलर प्रजाति के चूजे दिए। क्षेत्र में बॉटे गए 1200 चूजे आज मॉस व अण्डों के रूप में ग्रामीणों की आय बढ़ा रह हैं। क्षेत्र के 136 परिवार आज घर के पास सब्जी की खेती कर आय बढ़ा रहे हैं। लगभग परिवार ऐसे हैं जो एकीकृत मुर्गी बाड़े संचालित कर रहे हैं। मुर्गी के साथ मछली पाने की विद्या उनके लिए फलदायी हो रही हैं। 8 परिवार विभागीय योजनाओं से बकरी पालन का लाभ ले रहे हैं। वहीं 7 परिवारों ने वर्मी खाद को अपनी खेती व आय की प्रगति का माध्यम बनाया है।

ग्रामीण अपने आसपास के संसाधनों को पहचानें और उनका का सतत् विधि से प्रयोग करें व अपनी धरा की उपयोगिता को समझे इस सोच के साथ परियोजना के जुड़े युवाओं ने गॉवों में काम किया। यथा योग्य स्थानों पर किसानों को पॉलीहाउस देना, उनके साथ खेती में हाथ बंटाना, बंजर खेतों में ट्रेक्टर की पहुंच बनाना आदि कामों में परियोजना स्टाफ ने दिन रात कार्य किया।

परियोजना से आच्छादित गॉवों में अब ग्रामीणों की मनस्थिति में परिवर्तन साफ देखा जा सकता है। वे मानते हैं कि अनिश्चित जीवन और रोजगार के लिए मैदानों को भागना गलत हैं। पहाड़ों में काम व आय की अपार संभावनाएं उन्हें दिख रही है। छोटे स्तर पर अपने संसाधनों के अनुरूप खेती, पशुपालन, व रोजगार के अन्य विकल्पों को अपनाकर वे अपनी जरूरतें पूरी कर सकते हैं।

परियोजना के तहत वर्तमान प्राकृतिक चुनौतियों, मौसम परिवर्तन, तापमान में परिवर्तन, बरसात में उतार-चढ़ाव आदि की चेतना से भी ग्रामीणों को लैस किया गया। वर्तमान में मौसम, बाजार और आवश्यकता का ऑकलन कर अनेक ग्रामीण अपनी खेती व आजीविका के तौर तरीकों में परिवर्तन लाकर नए उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। ग्रमीणों में अपने गॉव व खेती के प्रति समग्र धारणा का विकास होना इस कार्य की मूल सफलता होगी।

पर्वतीय कृषि अनेक कारणों से चुनौतीपूर्ण होती जा रही है। कृषक इसका सामना करने में असमर्थ होने के कारण पलायन करता है।आज विज्ञान एवं परंपरागत तकनीकों के कृषकों की कार्यक्षमता बढ़ाने एवं उसे आत्मनिर्भर बनाने के लिए सर्वप्रथम मॉडल विकसित किए जाने चाहिए। ताकि छोटी जोतों को भी इससे लाभ मिले। इससे कृषकों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य भी प्राप्त होगा। उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि, बाजार का विस्तार, तकनीकी सहायता आदि को बढ़ावा देकर हम स्थानीय समुदायों को आत्मनिर्भरता की ओर ले जा सकते हैं।

डॉ डी० एस० रावत
परियोजना प्रमुख

भारतीय हिमालयी क्षेत्र की सामाजिक, पारिस्थितिकीय एवं प्राकृतिक पूंजी को संरक्षित व संवर्धित करने के ध्येय में संलग्न इस प्रकार की परियोजनाओं के सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं यह प्रयोग आने वाले समय में अनेक नीतिगत परिणाम भी देंगे। मध्य हिमालयी गॉवों की समस्याएं बहुस्तरीय और जटिल हैं लेकिन नए अध्ययनों और नए ज्ञान से उनके समाधान भी निकाले जा रहे हैं।

-ई० किरीट कुमार
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं
नोडल अधिकारी